(1)

B.A. History Hon's, Part II

Paper: III, Unit: V(b); Date: Lecture No. 16
18. 9. 2020

Lession: सल्तनतकालीन साहित्य

साहित्य की दृष्टि से सल्तनतकाल बिल्कुल शून्य था और इस काल में साहित्य का विकास अवरुद्ध हो गया, परन्तु इतिहासकारों का कथन असंगत प्रतीत होता है क्योंकि इस काल में साहित्य की पर्याप्त उन्नति हुई। इस काल के साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है:-

(a) इतिहास लेखन एवं प्रमुख इतिहासकार: जिआउद्दीन बरनी ने चार विद्वानों को सच्चा इतिहासकार माना है। 'ताजुलमासिर' के लेखक मिन्हाज सिराज और 'पद्मनाम' के लेखक ताजुद्दीन इराकी के पुत्र कबीरुद्दीन इराकी 'जामवे-उल-हिकायत' के लेखक मौलाना सदुद्दीन ओफी परन्तु इस काल के अनेक ग्रंथ फारसी में लिखे गये और अमीर खुसरो द्वारा रचित ग्रंथ किरानुस्सदायन, मिफ्ताहुल फुतुह, आशिक नहसिपिर आदि तथा तारीखे फिरोजशाही लुब्बातुत तारीख, और फतवा-ए-जहांदारी नामक पुस्तकें भी लिखी गयी। मिन्हाज सिराज शिक्षा एवं न्याय विभाग के प्रमुख पद पर पदासीन था। शम्सीराज अफीफ भी एक प्रसिद्ध इतिहासकार था। उसने 'तारीखे फिरोजशाही' मनाकीबे अलाई नामक पुस्तकें लिखी। ख्वाजा अब्द मलिक इसामी ने पद्य में 'फुतुहुस्सलातीन' लिखी। मुहम्मद तुगलक के समकालीन बद्र चाचा ने 'चचनामा' लिखा। खिलजीशासन काल में अमीर खुसरो, निजामुद्दीन औलिया तथा मीर हसन देहलवी ने भी अपना ग्रन्थों की रचना की थी। शेख रिजकुल्ला मुश्ताकी ने अपनी पुस्तक 'वकायते मुश्ताकी' (तारीखे मुश्ताकी) लिखी जो लोदी सुल्तान के शासन का इतिहास जानने का प्रमुख स्रोत है। लोदी सुल्तानों के इतिहास के मुख्य स्रोत अहमद यादगार की पुस्तक तारीखे सलातीने अफगाना (या तारीखे शाही) नियामत उल्ला की पुस्तक मखजाने अफगानी और अब्दुल्ला द्वारा रचित पुस्तक 'तारीखे दाऊदी' हैं।

(b) साहित्यकार एवं उनकी प्रमुख कृतियाँ: दिल्ली सल्तनत काल में विद्वानों की प्रतिभा बहुमुखी थी। विभिन्न भाषाओं के साहित्य को दर्शाया है:-

(i) फारसी साहित्य: दिल्ली के सुल्तानों ने फारसी को राजभाषा बनाया और इसके विकास के लिए संस्थाएँ स्थापित की। दिल्ली के अतिरिक्त, अजोधन, दीपालपुर, हांसी, सियालकोट, आजमेर और मुल्तान आदि स्थानों में फारसी संस्थाएँ खोली गई। कुतुबुद्दीन ऐबक ने विद्वानों एवं कवियों को उदारता से दान दिया। इल्तुतमिश ने भी विद्वानों का सम्मान किया। उसके दरबार में फारसी विद्वानों में प्रमुख थे ख्वाजा अबू नस्र, समरकन्द के अबू बक्र बिन मुहम्मद रुहानी, ताजुद्दीन दाबीर तथा नूरुद्दीन मुहम्मद औफी। औफी ने 'लुबाबुल अलबाब' और जवामेउल हिकायत वा लवामी उर रिवायात' नामक ग्रंथ लिखे। बलबन के दरबार में मध्य एशिया से बहुत से विद्वान आये, जिन्हें सुल्तान ने संरक्षण दिया। बलबन के पुत्र मुहम्मद ने अमीर खुसरो एवं मीर हसन देहलवी को संरक्षण प्रदान किया। खुसरो को बलबन से लेकर गयासुद्दीन तुगलक तक सभी शासकों ने संरक्षण प्रदान किया। उसके प्रमुख ग्रन्थों में 'खम्स' 'पंजगंज, 'मतलउल, अनवर' शीरीं व खुसरो, लैला, मजनू, आइने सिकन्दरी, आदि प्रमुख थे। मीर हसन देहलवी ने भी उच्च कोटि की गजलें लिखी। अलाउद्दीन खिलजी के दरबार के प्रमुख फारसी

विद्वान सुबुद्दीन अली, फखरुद्दीन, इमामुद्दीन रजा, मौलाना अशीद, आदि प्रमुख थे। जियाउद्दीन बरनी मुहम्मद तुगलक के दरबार का प्रमुख विद्वान था। इसका दूसरा प्रमुख विद्वान बदरुद्दीन मुहम्मद चाचा था। जिसके दो ग्रंथ 'दीवान' तथा 'शाहनामा' प्रसिद्ध है। सैयद एवं लोदी वंश के सुल्तानों के समय में भी फारसी भाषा के विकास के लिए कार्य किया गया। सिकन्दर लोदी वंश के सुल्तानों के समय में भी फारसी भाषा के विकास के लिए कार्य किया के बहुत से विद्वानों को दरबार की तरफ से अनुदान दिया गया।

(ii) संस्कृत साहित्य : उत्तर में मुसलमानी शासन की स्थापना के उपरांत हिन्दुओं की राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक प्रगति मन्द पड़ गयी थी परन्तु दक्षिण में इस काल में संस्कृत साहित्य का यथेष्ट विकास हुआ। दक्षिण भारत संस्कृत का केन्द्र था। विजयनगर राज्य के दो भाई थे-माधो तथा सायण। माधो ने वेदों पर टीकाएँ लिखीं तथा सायण ने दर्शनशास्त्र अपने ग्रंथों की रचना की थी। बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के राजकवि जयदेव ने 'गीत गोविन्द' की रचना की जो एक अद्भुत संस्कृत काव्य है। मैथिल कोकिल विद्यापति हिन्दी एवं संस्कृत दोनों के कवि थे।

(iii) हिन्दी साहित्य : मुसलमानों के भारत आगमन से यहाँ एक नयी भाषा का जन्म हुआ। पहले ब्रजभाषा जनसाधारण की भाषा थी, परन्तु मुसलमान फारसी बोलते थे। कालान्तर में फारसी एवं ब्रजभाषा के सम्मिश्रण से हिन्दी का जन्म हुआ। अमीर खुसरो ने इसी काल में एक 'फारसी हिन्दी कोष' की रचना की। भक्त कवि नामदेव रामानन्द, प्रसिद्ध है भक्त कवि नामदेव, रामानन्द, गुरुनानक और कबीर ने भी इसी समय में हिन्दी की कविताएँ लिखीं।

(iv) अन्य भाषाओं का साहित्य : स्वतंत्र प्रान्तीय शासन के अंतर्गत प्रांतीय भाषाओं के साहित्य की भी उन्नति हुई। बंगाल में रामायण और महाभारत का संस्कृत से बंगाली भाषा में अनुवाद इसी समय में किया गया। इसी काल में सन्त ज्ञानेश्वर ने 'गीता' पर मराठी में भाष्य लिखा। विजयनगर के राजाओं ने तेलगू साहित्य को प्रोत्साहन दिया और जैन साहित्यकारों ने तमिल तथा कन्नड भाषा में साहित्य की रचना की। इसके अतिरिक्त उर्दू भाषा का भी इसी समय में विकास हुआ।

□ डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर